तन मन्दिर में शिव को बिठायें

पल-पल बदलते संसार सागर में सेवा की परोपकारिता ही महानता की मापदण्ड है। सर्व हितकारी शिव परम-पिता ही अपनी प्रिय सन्तानों के लिये समदर्शिता वाला ऐसा मंगलमय पथ बताते हैं जिससे बच्चा-बूढ़ा-जवान या किसी भी स्थिति व वर्ग का व्यक्ति ईश्वरीय यादों का पथिक बन सबसे आगे हो सकता है। कहा जाता है ज्ञान बिना गति नहीं। श्रीमद्भगवद् गीता को सर्व शास्त्र-शिरोमणि कहते हुए दुनिया की सभी भाषाओं में उसका भाषान्तर किया गया है। लौकिकता का विधिवत निर्वहन करते हुए अलौकिकता की ओर बढ़ने के लिये उसमें आत्मा-प्रकृति और परमात्मा के तीनों कालों व तीनों लोंकों का इतिहास बताने की कोशिश की गयी है। ऐसे श्रेष्ठ शास्त्रों का हजार बार पठन-पाठन करने के बाद भी लोग अपने को गति-सद्गति का अधिकारी नहीं समझ पाते। इस प्रकार के अत्थान-पतन, हार-जीत के खेलों से आत्माओं की पवित्रता की ऊर्जा कलिकाल के अन्त में नहीं के बराबर ही बच पाती है। मारकण्डेय (मरते हुओं को जिलाने वाले) सदा शिव निराकार ही ऐसे सर्व समर्थ है जो अपना संस्पर्श देकर आत्माओं को पुनः चार्ज करते हुए, उन्हें आध्यात्मिक और भौतिक दोनों सम्प्रदायों से भरपूर कर देते हैं।

सृष्टि के पतित हो जाने पर उसे सम्पूर्ण सतोप्रधान बनाने जैसे अपौरुषेय कार्य करने के लिये उसे अनुभवी परन्तु सर्व साधारण मनुष्य तन का आधार लेकर सर्व की गति सद्गति देने वाला ज्ञान सुनाना पड़ता है। इस सृष्टि रंगमंच रूपी कर्म क्षेत्र पर कर्मों की खेती बोते और काटते समय विभिन्न स्वरूप बदलने वाली प्रकृति के सम्बन्ध में आने के कारण, उसके राग-द्वेश का बन्धन पड़ता ही रहता है। कलियुग के अंत में बन्धन इतने जटिल हो जाते हैं कि सभी लोग पग-पग पर उलझते और दुःख अशान्ति की ठोकरें खाते हुए, कुछ न कुछ माँगते पुकारते रहते हैं। उनका सतत आह्वान करने पर पापकटेश्वर-मुक्तेश्वर सदा शिव मानवीय तन का आधार ले उन्हें परम आश्रय की पहचान देते हैं। इसलिये शिव का प्रथम मंदिर सोमनाथ (ज्ञानामृत पिलाने वाले) के नाम से बनाया गया है। उनके महावाक्यों से वर्तमान, भूत और भविष्य की तर्कसंगत जानकारी मिलने से ही उनके महावाक्यों को परमात्मा की श्रीमत व सद्गति देने वाला सच्चा गीता ज्ञान कहते हैं। उनके पद्चिह्नों पर चलने से दैहिक-दैविक-भौतिक तीनों संताप समाप्त हो परमानन्द की अनुभूति होने लगती है।

प्राचीन भरतीय शास्त्रों के अनुसार कपिल मुनि से श्रापित हुए पूर्वजों को तारने के लिये भागीरथ ने घोर तपस्या कर गंगा को उतारा था। उस गंगा जल में स्नान करके लोग भ्रष्टाचारी से श्रेष्ठचारी नहीं बन पा रहे। वर्तमान में सम्पूर्ण मानवता काम-क्रोधादि विकारों से जलकर खाक हुई पड़ी है। ज्ञान के सागर तरन-तारन परमात्मा शिव पिताश्री ब्रह्मा के शरीर रूपी सागर में सन्निवेष कर प्यार-दुलार देते हुए हम सभी का उद्धार करते हैं। जन्म जन्मान्तर के संतापों को धोने वाले इन बेमिसाल श्रीवचनों को जीवन में धारण कर औरों को भी ब्राह्मण कुल-भूषण बनाने की प्रेरणा देते-लेते हुए देवतुल्य बनाने वाले ब्रह्मा बाबा का नाम स्वर्णाक्षरों में बहुत ऊपर लिखने योग्य है। क्योंकि उन्होंने अपने तन को ही चैतन्य मंदिर बनाकर सर्व समर्थ शिव बाबा को बिठाया है।

ओम् शान्ति

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स www.bkvarta.com